अध्याय-3

जनांकिक परिस्थितिकी की विशेषताएं
जनांकिक परिस्थितिकी की विशेषताएँ—

व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन, उसके भौगोलिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का प्रतिफल है। दुर्भीषण (1922), सोरोकिन (1927), श्रीनिवास (1960), मुखर्जी (1985)
आदि के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक पृष्ठभूमि व्यक्ति के जीवन के उन मूलभूत गुणों का समूच्छय है जो उसे एक सामाजिक सदस्य के रूप में प्रस्थापित करता है। भारतीय समाज में परम्परागत जाति व्यवस्था व्यक्ति को जन्म
से वंशानुगत व्यवसायों से आबद्ध करने में सक्रिय रही है, लेकिन औद्योगिकरण की प्रक्रिया के प्रारंभ होने के साथ ही जाति पर आधारित व्यवसायिक प्रतिबद्धता का
स्थल परिवर्तित हुआ है। व्यवसाय के नये अवसरों ने जाति, लिंग, धर्म, रंग और
भाषा में भेदभाव से परे प्रत्येक व्यक्ति का वैयक्तिक गुण एवं कौशल के आधार पर
अश्रम सहभागिता का समान अवसर प्रदान किया है। जनांकिक परिस्थितिकी की
विशेषताओं के अंतर्गत— जनसंख्या वितरण, घनत्व, वृक्षता, जनसंख्या—संरचना :
लिंग अनुपात, जाति, रंग, धर्म, आय आदि तथ्यों का विवेचन आवश्यक है।

जनसंख्या वितरण—

जनसंख्या वितरण एक गतिशील प्रक्रिया है। ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या
प्रतिरूप का स्थायी विशेष की जनसंख्या अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान होता है।
“किसी स्थान की जनसंख्या एवं भूमि में सीधा सम्बन्ध होता है।” (ट्रिवार्था, 1976)
इसलिए क्षेत्र विशेष में भूमि एवं जनसंख्या के सम्बन्ध में सम्पक ज्ञान हेतु जनसंख्या
वितरण का अध्ययन एक आवश्यक तथ्य है।

जनसंख्या वितरण में क्षेत्रीय विभिन्नता सम्बन्धी अध्ययन से भूगोल का सम्बन्ध एक
स्वतंत्र शाखा के रूप में जनसंख्या भूगोल के विकसित होने के पूर्व से ही विद्यमान
रहा है। “जनसंख्या भूगोल का प्रमुख उद्देश्य स्थान विशेष के सम्बन्ध में जनसंख्या
का वितरण घनत्व एवं एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्राप्त भिन्नता का अध्ययन
kरना है।” (माटनागर 1961)। “जनसंख्या वितरण न केवल मनुष्य के किसी क्षेत्र
विशेष में बसाव सम्बन्धी अभिप्रेरण एवं अर्थव। का धोतक होता है अपितु क्षेत्र में पाए जाने वाले भौगोलिक कारकों के संश्लेषण का स्पष्ट प्रदर्शन भी होता है।”
(हीरालाल, 1986)

“जनसंख्या वितरण, क्षेत्र की आवासीय योग्यता द्वारा निर्धारित होता है”
(स्टेल, 1955)। “जनसंख्या वितरण एक गतिशील प्रक्रिया है, जो स्थानिक एवं कालिक ढाँचे में परिवर्तित होती रहती है (क्लार्क, जे आई 1972, पृ. 14)। किंतु भी क्षेत्र में जनसंख्या का वितरण मूलतः क्षेत्र की सामान्य आवासीय योग्यता एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि द्वारा निर्धारित होती है। वर्तुख: आवासीय योग्यता का निर्धारण, धरातलीय संरचना, बनावट, झल विज्ञान एवं जलवायु द्वारा निर्धारित होती है। साथ ही साथ जनसंख्या का क्षेत्रीय वितरण तथा उसकी सघनता क्षेत्रीय आर्थिक क्रियाओं के ऊपर निर्भर करती है। क्षेत्र के आर्थिक “संसाधन सम्बन्ध” एक आर्थिक अन्तर परिवर्तन प्रत्यक्ष रूप से क्षेत्रीय जनसंख्या के प्रारूप को प्रभावित करती है। भौतिक और आर्थिक क्रियाओं के अतिरिक्त क्षेत्रीय ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व भी जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करती है। वर्तुख: वर्तमान वितरण, प्रारूप उपर्युक्त सभी क्रियाओं द्वारा प्रत्यक्ष एवं परस्पर रूप से प्रभावित है। इस संदर्भ में मऊ जनपद में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या का वितरण असमान है। सारणी 3.1 एवं सारणी 3.2 से तथ्यों की पुष्टि होती है।

सारणी 3.1
मऊ जनपद में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या प्रतिशत

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं.</th>
<th>जनसंख्या</th>
<th>जनपद मऊ</th>
<th>पूरी उत्तर प्रदेश</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1-</td>
<td>ग्रामीण</td>
<td>92.04</td>
<td>94.97</td>
</tr>
<tr>
<td>2-</td>
<td>नगरीय</td>
<td>7.96</td>
<td>5.03</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>योग</td>
<td>100</td>
<td>100</td>
</tr>
</tbody>
</table>
MAU DISTRICT
DISTRIBUTION OF RURAL POPULATION

INDEX

ONE DOT 5000 PERSONS

Fig - 3.1
सारणी संख्या 3.2

जनसंख्या वितरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रमांक</th>
<th>विकास खण्ड का नाम</th>
<th>जनसंख्या</th>
<th>विन्दुओं की संख्या (० = 5000 व्यक्ति)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1-</td>
<td>दोहरीघाट</td>
<td>169493</td>
<td>34</td>
</tr>
<tr>
<td>2-</td>
<td>फतेहपुर मण्डव</td>
<td>192089</td>
<td>38</td>
</tr>
<tr>
<td>3-</td>
<td>घोसी</td>
<td>145779</td>
<td>29</td>
</tr>
<tr>
<td>4-</td>
<td>बड़रौँ</td>
<td>168698</td>
<td>34</td>
</tr>
<tr>
<td>5-</td>
<td>कोपागंज</td>
<td>181487</td>
<td>36</td>
</tr>
<tr>
<td>6-</td>
<td>परदहाँ</td>
<td>168663</td>
<td>34</td>
</tr>
<tr>
<td>7-</td>
<td>रतनपुरा</td>
<td>161812</td>
<td>32</td>
</tr>
<tr>
<td>8-</td>
<td>मुहम्मदाबाद</td>
<td>186087</td>
<td>37</td>
</tr>
<tr>
<td>9-</td>
<td>रानीपुर</td>
<td>195068</td>
<td>39</td>
</tr>
</tbody>
</table>

अध्ययन क्षेत्र के वितरण मानचित्र (3.1) को देखने से स्पष्ट होता है कि विकास खण्ड घोसी एवं रतनपुरा में जनसंख्या का बसाव कम है तथा दोहरीघाट, बड़रौँ, परदहाँ में जनसंख्या का वितरण मध्यम एवं रानीपुर, मुहम्मदाबाद, फतेहपुर मण्डव में उच्च जनसंख्या बसाव है अर्थात् जनसंख्या काफी बसी हुई है।

घनत्व-

जनसंख्या घनत्व प्रति इकाई क्षेत्रफल पर निवास करने वाली जनसंख्या का परिचालक है (चांदना और सिद्धू, 1980)। किसी प्रदेश के क्षेत्रफल तथा उसके घनत्व के पारस्परिक अनुपात को जनसंख्या का घनत्व कहते हैं। किसी प्रदेश में
जनसंख्या का घनत्व वहाँ के प्राकृतिक संसाधनों और आर्थिक विकास की अवस्था पर निर्भर करता है। (वी.पी. कुमार, 1995)। जनसंख्या घनत्व संकल्पना मनुष्य के क्षेत्रीय वितरण प्रारूप को स्पष्ट करने का एक अन्यत्म महत्वपूर्ण स्थान है। (क्लार्क, 1972)। क्षेत्र में मनुष्य और भूमि को महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है (डेनको, 1970) किसी भी क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की एक सीमा होती है, जनसंख्या इन सभी संसाधनों के विद्युत के स्तर को निर्धारित करती है। इससे प्रतिविधित कार्यान्वयन, प्रतिविधित आय एवं जीवन स्तर का ज्ञान होता है। अतः क्षेत्र विशेष की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति का प्रारूप निर्धारित करने के लिये उस जनसंख्या की सघनता का परिशोधन अपेक्षित है। क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या और तक्ष्यन्त्र के परस्परिक अनुपात से जनसंख्या का घनत्व ज्ञात होता है।

\[
\text{घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल क्षेत्रफल}}
\]

उच्च घनत्व क्षेत्र—

सारणी संख्या (3.3) को देखने से स्पष्ट होता है कि 1991 में अध्ययन क्षेत्र की तीन विकास खण्डों में दोहरीघाट, घोसी, मुहम्मदाबाद, रानीपुर क्रमशः 828, 944, 940 व्यक्ति/वर्ग किमी2 मध्यम घनत्व के साथ उच्च घनत्व जनसंख्या घनत्व वाला विकास खण्ड था जबकि 2001 में चार विकास खण्ड क्रमशः दोहरीघाट, घोसी, परदर्श, मुहम्मदाबाद 1090, 1312, 1027, 1204 प्रति वर्ग किमी2 जनसंख्या घनत्व रखते हुए प्रथम स्थान पर है।

मध्यम घनत्व क्षेत्र—

1991 की जनगणना के अनुसार तीन विकास खण्ड बड़रघाव, कोपाघाट, परदर्श क्रमशः 719, 729 और 778 व्यक्ति/वर्ग किमी2 के साथ मध्यम जनसंख्या घनत्व वाले विकास खण्ड थे जबकि 2001 में बड़रघाव, कोपाघाट क्रमशः 948, 941 व्यक्ति प्रति जनिङ्गन्त्र के साथ मध्यम स्थान पर है।

निम्न घनत्व क्षेत्र—

1991 की जनगणना के अनुसार तीन विकास खण्ड फतेहपुर मण्डल, रतनपुरा, रानीपुर क्रमशः 570, 621 और 667 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी2 के साथ निम्न स्थान पर रहे जबकि 2001 में तीन विकास खण्ड क्रमशः फतेहपुर मण्डल,
रतनपुरा, रानीपुर 725, 831 और 844 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी 0 जननगन्तव वाले क्षेत्रों
को प्रदर्शित करते हैं और सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का सन् 1997 में कुल ग्रामीण
जनसंख्या घनत्व 717 एवं नगरीय जननगन्तव 4775 एवं 2001 में सम्पूर्ण ग्रामीण क्षेत्र
936 एवं नगरीय 5574 व्यक्ति/वर्ग किमी 0 जनसंख्या घनत्व अंकित है। चित्र 3.2
और 3.3 को देखने से स्पष्ट होता है।

### सारणी 3.3

#### जनपद—मऊ में जनसंख्या का घनत्व

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. सं. का नाम</th>
<th>विकास खण्ड</th>
<th>जनसंख्या 1991</th>
<th>घनत्व व्यक्ति/किमी 1991</th>
<th>जनसंख्या 2001</th>
<th>घनत्व व्यक्ति/किमी 2001</th>
<th>क्षेत्रफल वर्ग किमी</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>दोहरीघाट</td>
<td>128672</td>
<td>828</td>
<td>169493</td>
<td>1090</td>
<td>155.4</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>फतेहपुर मण्डल</td>
<td>151268</td>
<td>571</td>
<td>192089</td>
<td>265.0</td>
<td>—</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>घोरी</td>
<td>104938</td>
<td>944</td>
<td>145749</td>
<td>1312</td>
<td>111.1</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>बढ़राँ</td>
<td>127877</td>
<td>719</td>
<td>168698</td>
<td>948</td>
<td>177.9</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>कोपागंज</td>
<td>140666</td>
<td>729</td>
<td>181487</td>
<td>941</td>
<td>192.9</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>परसला</td>
<td>127842</td>
<td>778</td>
<td>168663</td>
<td>1027</td>
<td>164.3</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>रतनपुरा</td>
<td>120991</td>
<td>621</td>
<td>161812</td>
<td>831</td>
<td>194.8</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>मुहम्मदाबाद</td>
<td>145266</td>
<td>940</td>
<td>186087</td>
<td>1204</td>
<td>154.5</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>रानीपुर</td>
<td>154247</td>
<td>667</td>
<td>195068</td>
<td>844</td>
<td>231.0</td>
</tr>
</tbody>
</table>

#### ग्रामीण योग
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र. सं. का नाम</th>
<th>विकास खण्ड</th>
<th>जनसंख्या 1991</th>
<th>घनत्व व्यक्ति/किमी 1991</th>
<th>जनसंख्या 2001</th>
<th>घनत्व व्यक्ति/किमी 2001</th>
<th>क्षेत्रफल वर्ग किमी</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>ग्रामीण योग</td>
<td>1201787</td>
<td>716</td>
<td>1569176</td>
<td>936</td>
<td>1676.8</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>नगरीय योग</td>
<td>243995</td>
<td>4774</td>
<td>284830</td>
<td>5574</td>
<td>51.1</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>कुल योग</td>
<td>1445782</td>
<td>837</td>
<td>1854006</td>
<td>1073</td>
<td>1727.9</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत— जनपद सार्वजनिक विभाग, मऊ
MAU DISTRICT

DENSITY OF RURAL POPULATION
(1991)

INDEX

PERSONS/Km.²

- < 600
- 600-700
- 700-800
- 800-900
- > 900

Fig - 3.2
MAU DISTRICT
DENSITY OF RURAL POPULATION
(2001)

INDEX
PERSONS/Km.$^2$
- < 600
- 600-700
- 700-800
- 800-900
- > 900

Fig - 3.3
जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक—

जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों का विवरण निम्नलिखित है।

(1) प्राकृतिक कारक—

जनसंख्या घनत्व को नियंत्रित करने वाले कारकों में प्राकृतिक कारक सबसे महत्वपूर्ण होता है। जनसंख्या वितरण एवं घनत्व अनवरत परिवर्तनशील होता रहता है और इसको प्रभावित करने वाले कारक भी स्थानकाल के संदर्भ में बदलते रहते हैं। विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय तत्त्व मानव के निवास स्थान के चुनाव को प्रभावित करते हैं। किसी भी व्यक्ति का किसी स्थान पर बसने का निर्णय, जो सांस्कृतिक द्वारा प्रभावित होता है, बदले में पर्यावरण पर अवशय ही है, जहाँ पर समातल धरातल, पृथ्वी और आई जलवायु उपजाऊ मिट्टी प्रचुर मात्रा में खनिज तथा शुद्ध जल की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत जनसंख्या वहाँ से दूर होती जाती है जहाँं ऊँचाई शुष्कता, शीत, उल्चावत में विश्वसनीय जाती है, प्रभाव ढ़ालता है (हीरालाल, 1999)।

(2) आधिकारिक कारक—

पृथ्वी पर मनुष्य एक बुद्धिमान और क्रियाशील प्राणी है। मानव ने अपनी क्रियाशीलता और बुद्धिमत्ता से भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात व अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति बढ़े पैमाने पर करने लगा है। जिससे पृथ्वी पर अधिक जनसंख्या की निवास सम्भव हो सकता है। आज मनुष्य पर अधिक जनसंख्या का निवास सम्भव हो सकता है। आज मनुष्य में मत्स्याखेत, व्यापार, पशुपालन, कृषि, खनन, उद्योग, यातायात व संचार सेवाओं के क्षेत्र में भारी प्रगति की है। जनसंख्या के वितरण में भौतिक कारकों की तुलना में आधिकारिक कारक अधिक सार्थक व महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि मानव के निवास के लिये उपर्युक्त भूमि व जलवायु की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि जीवन यापन के लिये साधनों की आवश्यकता होती है, जिसकी पूर्ति आधिकारिक वस्तुएँ करती हैं।

(3) सामाजिक—सांस्कृतिक कारक—

सामाजिक—सांस्कृतिक एवं भौतिक कारकों में कोना—सा घटक जनसंख्या घनत्व एवं वितरण को प्रभावित करता है, यह कह पाना काफी कठिन नहीं तो दुरुह अवश्य है। सामाजिकता यह माना जाता है कि विज्ञान व तकनीकी विकास के
साथ-साथ गैर भौतिक तत्त्वों का महत्व बढ़ने लगा है। नगरों के बढ़ने के साथ भौतिक वातावरण का जनसंख्या वितरण पर प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक घटकों में मानव अधिवास का इतिहास, अर्थ व्यवस्था का प्रकार, तकनीकी व औद्योगिक विकास, राजनैतिक निर्णय और सामाजिक संगठन प्रमुख है (कलार्क, 1971)।

(4) राजनैतिक संगठन व नीतियाँ—

जनसंख्या घनत्व को राजनैतिक कारक बहुत ही प्रभावित करता है। राजनीति के कारण देश की सीमाओं का निर्धारण तथा व्यापार दोनों प्रभावित होते हैं। इससे जनसंख्या घनत्व पर काफी असर पड़ता है। इन राजनैतिक घटकों के प्रभाव से छोटे स्तर पर विश्व के विभिन्न भागों का जनसंख्या मानचित्र अनवरत बदलता रहता है। वर्तमान समय में जनसंख्या निर्धारक घटकों में लोकनीति का महत्व दिनांकित बढ़ता जा रहा है। सोशियल संघ के सुदूर पूर्वी भाग में मानव अधिवास का प्रयास सरकारी नीति का ही परिणाम है। सामाजिक संगठन व पारस्परिक वर्ग भेद जैसे कारक सूक्ष्म स्तर पर जनसंख्या वितरण को स्पष्ट रूप से प्रभावित करते हैं। पड़ोसी देशों के साथ विदेशी व्यापार की सरकारी नीति, विशेषतः उन देशों के संदर्भ में, जिनके साथ स्थल सीमा सम्बन्ध हो, समीपवर्ती क्षेत्रों में जनसंख्या जमाव को प्रभावित करती है।

जनसंख्या वृद्धि—

किसी क्षेत्र विशेष के भौगोलिक अध्ययन में जनसंख्या एवं उसकी विशेषताओं का अध्ययन एक महत्वपूर्ण पक्ष होता है। जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या गत्यात्मकता के अध्ययन का एक प्रमुख घटक है। "जनसंख्या वृद्धि का अभिप्राय किसी भू-भाग पर एक निष्क्रिय समय के अन्तर्गत इस वृद्धि को कहा जाता है। जिसमें सामाजिक, आर्थिक तथा पर्यावरणीय कारकों के आधार पर लगातार परिवर्तन होता रहता है, किन्तु जनसंख्या की गणना एक निष्क्रिय समय पर न होने के कारण जनसंख्या वृद्धि का स्पष्ट चिह्न उभर कर सामने नहीं आ पाता है। (1984)

वर्तमान समय में आर्थिक विकास में पिछड़े राष्ट्रों एवं क्षेत्रों की जनसंख्या वृद्धि प्रायः विकसित राष्ट्र एवं क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है, जिसका मुख्य कारण निर्णय,
धर्मस्थितता, साकारता का अभाव एवं अनेक सामाजिक कुरीतियाँ हैं, जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि को रोकने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। फ्रान्सीसी अर्थशास्त्रियों ने “मानवशक्ति की तुलना सोना और चौंदी से की है तथा जनसंख्या वृद्धि को राष्ट्र के आर्थिक प्रगति का सूचक बताता है।”

“मानव एक बौद्धिक प्राणी होने के फलस्वरूप अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भौतिक पर्यावरण को एक निश्चित सीमा तक परिवर्तित कर अपने लिए उपयोगी बनाता है, और साथ ही साथ उससे प्रभावित भी होता है।” (रिचर्ड आई.0, 1978) यही कारण है कि किसी प्रदेश की जनांकिकीय विशेषताएँ उस प्रदेश के भौतिक वातावरण द्वारा प्रभावित होती है।

किसी स्थान विशेष की जनसंख्या में एक निश्चित अवधि में मात्रात्मक परिवर्तन को जनसंख्या परिवर्तन कहते हैं, चाहे वह परिवर्तन धनात्मक हो या ऋणात्मक। “जनसंख्या समूह में किसी प्रकार का परिवर्तन ही जनसंख्या वृद्धि कहलाता है, यह परिवर्तन यदि वृद्धि में है तो धनात्मक और हासा में है तो ऋणात्मक कहलाता है” (ओ0 पी0, 1973)। “विकसित देशों की अपेक्षा विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि प्रायः तीव्र होती है (सिद्धू, 1980)। भारत में भी ऐसी ही स्थिति देखने को मिलती है। यहाँ साकारता एवं शिक्षा की कमी, समाज में यथोद्धत अव्यवस्था एवं धनात्मक सुधियों का विकास न होने तथा जीवन दृष्टिकोण पर धर्मस्थितता का प्रभाव होने के कारण जनसंख्या में तीव्र वृद्धि दृष्टिगत होती है। “जनसंख्या एक संदर्भ बिन्दु हैं, जिसके द्वारा अन्य समीतत्व देखे जाते हैं तथा जिसके द्वारा ही वे सभी अकेले व सामूहिक रूप में महत्व तथा अर्थ आर्जित करते हैं।” (जी0 टी0 ट्रिवाथी)

ईसा के जन्म पर सम्पूर्ण संसार में लगभग 25 करोड़ लोग विद्यमान थे, जिसे 50 करोड़ तक पहुँचने में 1650 वर्ष लगे। 1820 वर्ष तक यह जनसंख्या बढ़कर 100 करोड़ हो गयी। इसके बाद 1930 ई. में 3 अरब, 1982 में 4 अरब और 1997 में 4.5 अरब रही। सन् 2001 तक इस ग्रह पर 6 अरब से अधिक जनसंख्या हो गयी। इन आकड़ों को दूसरे प्रकार से भी व्यक्ति किया जा सकता है— 25 करोड़ से 50 करोड़ होने में लगभग 17 शताब्दी का समय लगा, जबकि यह 50 करोड़ मात्र थी।
जो 170 वर्षों में ही दोगुनी हो गयी। पुनः 1 से 2 अरब होने में 45 वर्ष लगे। जबकि विश्व जनसंख्या 2 से 4 अरब हो गयी। वर्तमान वृद्धि पर जनसंख्या के दोगुने होने का समय घटकर मात्र 35 वर्ष ही रह गया।

अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा का अभिन्न अंग है, जो वृहद स्तर पर गंगा-धारा दोआब के अंतर्गत आता है, एवं घाघरा नदी के दक्षिणी भाग में स्थित है अतः कुछ ऊसर क्षेत्रों को छोड़कर सम्पूर्ण विकास खण्ड उपजाउ जलोध मृदा द्वारा निर्मित है। यहाँ पर बस्तियों का विकास कब से प्रारंभ हुआ यह एक विलुप्त प्रश्न है, परन्तु सिन्धु घाटी उपनयन के साथ-साथ अध्ययन क्षेत्र में भी जनसंख्या निवास करने लगी। उन दोनों विज्ञान द्वारा अध्ययन क्षेत्र के निवास स्थान के रूप में चयन करने का प्रमुख कारण उपजाउ मृदा और जल की उपलब्धता थी, जबकि आधुनिक समय में जनसंख्या वृद्धि के निम्नलिखित कारण हैं—

1. **जैविक कारक—**
   
   इसके अंतर्गत जन्म पर निर्यात करने वाला कारक भी कहा जा सकता है।

2. **जनानिकीय कारक—**
   
   इन कारकों की दृष्टि से आयु, यौन संगठन, आवास और आर्थिक कार्यों में स्तरों की संलग्नता भी महत्वपूर्ण कारक है जिनका जन्म दर पर निर्यात होता है।

3. **सामाजिक कारक—**
   
   इसके अंतर्गत वैष्णविक आयु, यौन स्वभाव, शिक्षा, मृत्यु दर आदि कारकों को लिया जा सकता है।

मध्य गंगा के उपजाउ मैदान में स्थित 'मठ' जनपद जनसंख्या की दृष्टि को से धनी जनपद है। इस जनपद में जनसंख्या का कार्य सर्वप्रथम 1837 ई। में ब्रिटिश सरकार द्वारा सम्पन्न कराया गया फर्तु सुविधागत रूप में जनसंख्या का कार्य 1871 ई। से प्रारंभ हुआ और तभी से प्रत्येक दशक में वर्ष जनसंख्या विभाग द्वारा जनसंख्या का कार्य सम्पन्न होता है। वर्ष 1981 ई। में सम्पूर्ण जनपद की जनसंख्या लगभग 1244561 थी जो दशकीय वृद्धि के अनुसार सन् 1991 ई। में 1445782 तथा 2001 ई। में बढ़कर 1854006 हो गयी। बढ़ती जनसंख्या सन् 1981 में 2001 अर्थात् 20 वर्षों में 609445 की वृद्धि हुई है। (विष्ट 3.3 एवं सारणी 3.4)
MAU DISTRICT
POPULATION GROWTH

Population Growth (in %)

YEAR

Fig - 3.4
सारणी— 3.4

जनपद मठ में दशकीय जनसंख्या वृद्धि

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>सम्पूर्ण जनसंख्या</th>
<th>दशकीय वृद्धि %</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1961</td>
<td>991418</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>1971</td>
<td>1081217</td>
<td>+ 9.05</td>
</tr>
<tr>
<td>1981</td>
<td>1244561</td>
<td>+ 15.11</td>
</tr>
<tr>
<td>1991</td>
<td>1445782</td>
<td>+ 16.17</td>
</tr>
<tr>
<td>2001</td>
<td>1854006</td>
<td>+ 28.24</td>
</tr>
</tbody>
</table>

अध्ययन क्षेत्र में दशकीय जनसंख्या वृद्धि में उत्तरोत्तर परिवर्तन हुआ है। जिसमें सन् 1971 की तुलना में 15.11 प्रतिशत वृद्धि दर रही। इसी प्रकार 1981 से 1991 की वृद्धि दर 16.17% तथा 1991—2001 में यह बढ़कर 28.24 प्रतिशत है। सारणी सं6.3 से स्पष्ट है कि जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही है। अध्ययन क्षेत्र में सारणी संख्या (2.6) से स्पष्ट है कि 1991 की जनगणना के अनुसार कुल ग्रामीण जनसंख्या 1991 से 2001 तक 30.57% की वृद्धि दर अंकित की गयी है। घोसी विकास खण्ड 1991 और 2001 तक वृद्धि का प्रतिशत सबसे अधिक 38.89 प्रतिशत बढ़कर प्रथम स्थान पर बनी रही जबकि 1991 में घोसी विकास खण्ड न्यूनतम जनसंख्या वाला क्षेत्र था। इसी प्रकार रानीपुर 33.73%, दूसरे स्थान पर एवं पर्दाहाँ 31.93% इसी प्रकार क्रमशः 31.92, 31.72, 29.01, 28.10, 26.99 और 26.46% बड़ों, दोहरीघाट, कोपागंज, मुहम्मदाबाद, फतेहपुर मण्डव, रानीपुर की जनसंख्या वृद्धि अंकित की गयी है न्यूनतम जनसंख्या वृद्धि रानीपुर विकास खण्ड में आंकी गयी है। (सारणी 3.5)
### सारणी-3.5

#### मऊ जनपद में जनसंख्या वृद्धि

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.</th>
<th>विकास खण्ड का नाम</th>
<th>कुल जनसंख्या 1991</th>
<th>कुल जनसंख्या 2001</th>
<th>वृद्धि (%)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1-</td>
<td>दोहरीघाट</td>
<td>128672</td>
<td>169493</td>
<td>31.72</td>
</tr>
<tr>
<td>2-</td>
<td>फतेहपुर मण्डाव</td>
<td>151268</td>
<td>129089</td>
<td>26.99</td>
</tr>
<tr>
<td>3-</td>
<td>घोसी</td>
<td>104958</td>
<td>145779</td>
<td>38.89</td>
</tr>
<tr>
<td>4-</td>
<td>बड़रोव</td>
<td>127877</td>
<td>168698</td>
<td>31.92</td>
</tr>
<tr>
<td>5-</td>
<td>कोपारांज</td>
<td>140666</td>
<td>181487</td>
<td>29.01</td>
</tr>
<tr>
<td>6-</td>
<td>परदहाँ</td>
<td>127842</td>
<td>168663</td>
<td>31.93</td>
</tr>
<tr>
<td>7-</td>
<td>रतनपुरा</td>
<td>120991</td>
<td>161812</td>
<td>33.73</td>
</tr>
<tr>
<td>8-</td>
<td>मुहम्मदाबाद</td>
<td>145266</td>
<td>186087</td>
<td>28.10</td>
</tr>
<tr>
<td>9-</td>
<td>रानीपुर</td>
<td>154247</td>
<td>195068</td>
<td>26.46</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल योग</td>
<td>1201787</td>
<td>1569176</td>
<td></td>
<td>30.57</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**स्रोतः** जिला सांख्यिकीय पत्रिका, मऊ

किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या का उसके विकास स्तर से पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, तथा आर्थिक कार्यक्रम की सफलता एवं सामाजिक सांस्कृतिक विकास एवं वहाँ की जनसंख्या के गुणात्मक संरचना पर निर्भर करता है, अतः क्षेत्र विशेष में मानव अधिवास के सर्वार्थी विकास के लिये बहुस्तरीय योजनाओं का निर्माण वहाँ की जनसंख्या के अध्ययन के बाद नहीं किया जा सकता है, क्योंकि जनसंख्या का सीधा सम्बन्ध मानव अधिवास से होता है।
जनसंख्या-संरचना एवं लिंग अनुपात-

जनसंख्या की संरचना में लिंग संरचना, आयु, संरचना, आर्थिक, संरचना, शिक्षा, जाति, धर्म, रोजगार की दशाएँ तकनीकी झांक, प्रतिवर्तित आय मुख्य तत्त्व हैं। “किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या की कार्यानेक संरचना क्षेत्र विशेष की संरचनात्मक संगठन को प्रदर्शित करती है।” (रिचर्ड) “जनसंख्या एक उत्पादक तत्त्व है और इसकी उत्पादकता इसकी कार्यक्षमता पर ही निर्भर करती है। अतः इस तत्त्व से भी जनसंख्या की संसाधनता प्रभावित होती है। किसी भी समाज की उपलब्धता का प्रभाव सर्वाधिक होता है।” (चांदना एवं सिद्ध)

लिंग अनुपात किसी क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक दशाओं का सूचक है। लिंग अनुपात का प्रभाव जनसंख्या वृद्धि, विवाह की दर और व्यवसायिक संरचना पर पड़ता है। (जी10 टी10 ट्रावाथी, 1933).

लैंगिक अनुपात सामाजिक मान्यता और आर्थिक कार्यों से सम्बंधित समस्याओं को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्त्व है। लिंग अनुपात का प्रभाव जनसंख्या वृद्धि, विवाह की दर और व्यवसायिक संरचना पर पड़ता है। मानव संसाधन की उपलब्धता से यह प्रभावित है। भारत में यह जलवायु से प्रभावित है। भारत में 1000 पुरुषों पर महिलाएं 935, उत्तर प्रदेश में 886, जनपद मधु में 986 (1991) जबल्कि भारत में 2001 में 933, उत्तर प्रदेश में 898 अध्ययन क्षेत्र में 1001 है। जनपद का अनुपात सामाजिक रहते हुए भी बढ़ता जा रहा है। विवाह की दर अधिक है, इसलिये जनसंख्या की वृद्धि सामाजिक से अधिक है। व्यवसायिक संरचना का लिंग अनुपात पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। जनपद में जनसंख्या बेरोजगारी के प्रभाव के कारण व्यवसायिक संरचना के प्रतिकूल है।

लैंगिक अनुपात-

यह सामाजिक मान्यता और आर्थिक कार्यों से सम्बंधित समस्याओं को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण तत्त्व है। मानव पर्यावरण की उपलब्धता से यह प्रभावित है। भारत देश में यह जलवायु से प्रभावित है, भारत देश में 1000 पुरुषों पर महिलाएं 933, उत्तर प्रदेश में 1000 पुरुषों पर महिलाएं 898, जनपद मधु में 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 1001 है (2001) जो सारणी संख्या (3.6) से ल्याप्त है।
सारणी संख्या (3.6)
जनपद मठ में लैगिक अनुपात
(लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर)

<table>
<thead>
<tr>
<th>सं</th>
<th>विकास खण्ड का नाम</th>
<th>वर्ष 1991</th>
<th>वर्ष 2001</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>दोहरीघाट</td>
<td>63976</td>
<td>84046</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>64696</td>
<td>85047</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>फतेहपुर मण्डव</td>
<td>75559</td>
<td>98250</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>75709</td>
<td>97839</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>घोसी</td>
<td>52041</td>
<td>72856</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>52917</td>
<td>72893</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>बड़रोंग</td>
<td>64719</td>
<td>85617</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>63158</td>
<td>83081</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>कोपांगज</td>
<td>68933</td>
<td>91428</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>71733</td>
<td>90059</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>परदेही</td>
<td>61678</td>
<td>84217</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>66164</td>
<td>84046</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>रतनपुरा</td>
<td>59599</td>
<td>80843</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>61392</td>
<td>80969</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>मुहमदाबाद</td>
<td>72713</td>
<td>93200</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>72553</td>
<td>92887</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>राजपुर</td>
<td>76386</td>
<td>97434</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>77861</td>
<td>97634</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>कुल योग ग्रामीण</td>
<td>—</td>
<td>784291</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>—</td>
<td>784885</td>
</tr>
<tr>
<td>11</td>
<td>कुल योग नगरीय</td>
<td>—</td>
<td>142515</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>—</td>
<td>142315</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत— जिला सांख्यिकी पत्रिका, मठ

शिक्षा—

"साक्षरता से आर्थिक विकास करन सम्बन्ध है। शिक्षा सामाजिक विकास और आर्थिक की जन्मदात्री है।" डा. अमर्थ्यल से अनेक सामाजिक समूहों के जनन प्रतिरूप पर शिक्षा का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। साक्षरता तथा जन्म दर के बीच प्रतिकूल सह—सम्बन्ध दिखाई देता है। इसमें लड़कियों की शिक्षा विशेष महत्व रखती है। भारतीय राष्ट्रीय प्रतिदर्श संस्करण द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया है कि
इन्टरमीडिएट उत्ती स्तरी के दो बच्चे, हाईर्स्कूल स्तर 4–6 बच्चे, मीडिल पास के 5 बच्चे तथा कक्षा 5 पास निरक्षर और और बच्चों का औसत आता है ऐसा विश्व स्तर पर देखने को मिलता है। इस प्रकार शिक्षा से एक और जाने व्यक्ति विशेष की क्षमता बढ़ती है, दूसरी और लोगों के अर्थिक, सामाजिक जागरूकता उत्पन्न होने एवं परिचार के प्रति जिम्मेदारी सम्बन्धी दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है।

नगरीय औद्योगिक जीवन की मूलभूत इकाई उद्योगों के लिए आवश्यक कौशल युक्त श्रमिक और उनके प्रबंधक के लिए पूर्ण प्रशिक्षित नौकरशाही है। औद्योगिक संरचना में मशीनों की गुणवत्ता में वृद्धि के साथ—साथ कुटीर उद्योगों के उद्यमियों की गुणवत्ता में वृद्धि आवश्यकता होती है। मशीनों की उपायदेयता प्रशिक्षित एवं कुशल मानव श्रम पर ही आधारित है। भारत में शिक्षास्तर स्वांबंधता के बाद उत्पन्न तीव्रगति से बढ़ा है। वर्तमान समय में कुल जनसंख्या में 52 प्रतिशत से भी अधिक लोग शिक्षित हैं।

आर्थिक नीतियों के माध्यम से अन्तराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में सफलता और धारणीय विकास का मूल आधार उच्च शिक्षित है। सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण दोनों इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। समाज में प्रभावी प्रकार्यतमता बनाने रखने के लिए सामान्य शिक्षा आवश्यक होती है, तो दूसरी और विभिन्न कार्यों के लिए उद्योग बाजार में प्रवेश करने हेतु विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। उत्पादकता, वृद्धि, आय, कार्य गतिशीलता, उद्यम—कौशल और प्रौद्योगिकीय अनुसंधान आदि के माध्यम से आर्थिक प्रगति हेतु पुरस्कृत एवं स्नियों का शिक्षित एवं प्रशिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। औद्योगिक देशों में परिवर्तनशीर्ष अर्थ—व्यवस्था की तीव्र गति से समायोजन के लिए सैकड़ों सुधार में विशेष कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण के माध्यम से कुटीर उद्योगों के उद्यमियों की उत्पादन शक्ति में विकास करना है। उद्यमियों के कौशल वृद्धि के लिए उद्योगों के द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जाते हैं। विकासशील देशों में इस दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है। 5–9 मार्च, 1990 में थाइलैण्ड में शिक्षादर्श आयोजित विश्व सम्मेलन के आयोजन में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान और
सांस्कृतिक संगठन तथा विश्व बैंक आदि की भूमिकाएँ प्रमुख थी। भारत में भी 1986 में नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की जा चुकी है। इस शिक्षा नीति के अन्तर्गत सर्वे विकास के लिए शिक्षा को प्रमुख अधिकरण समझा गया है। औपचारिक तथा अनौपचारिक शैक्षणिक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करने की योजना बनाई गयी है। मछु जनपद के कुटीर उद्योगों के उद्यमियों की शिक्षा का स्तर हम सारणी 3.7 में देख सकते हैं।

सारणी-3.7

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं.</th>
<th>शिक्षा का स्तर</th>
<th>सर्वे उद्यमी की संख्या</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1-</td>
<td>प्राथमिक या उससे कम</td>
<td>7</td>
<td>3.5</td>
</tr>
<tr>
<td>2-</td>
<td>जूनियर हाईस्कूल</td>
<td>11</td>
<td>5.5</td>
</tr>
<tr>
<td>3-</td>
<td>हाईस्कूल</td>
<td>30</td>
<td>15.0</td>
</tr>
<tr>
<td>4-</td>
<td>इंटरमीडिएट</td>
<td>102</td>
<td>51.0</td>
</tr>
<tr>
<td>5-</td>
<td>स्नातक</td>
<td>42</td>
<td>21.0</td>
</tr>
<tr>
<td>6-</td>
<td>स्नातकोत्तर</td>
<td>8</td>
<td>4.0</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>200</td>
<td>100.00</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत : व्यक्तिगत सर्वे 2006 पर आधारित।

सारणी के अन्तर्गत शिक्षा के स्तर पर कुटीर उद्योग के उद्यमियों का वर्गीकरण स्पष्ट है। अधिकांश उद्यमी इंटरमीडिएट उत्तरित हैं और सबसे कम उद्यमी प्राथमिक या उससे कम साक्षर हैं। स्वतंत्रता के बाद शैक्षिक सदस्यों में हुये परिवर्तन का प्रतिफल भारत के सभी क्षेत्रों में दिखाई पड़ता है। 1991 की जनगणना प्रतिवेदन से यह स्पष्ट है कि अन्य राज्यों की तुलना में 30 प्रो में साक्षरता दर कम है। कुल 41.71 लोग इस प्रदेश में साक्षर हैं जबकि केरल जैसे
राज्य में साक्षरता दर 90.59 प्रतिशत है। इससे स्वाभाविक होता है कि अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा का स्तर बहुत निम्न है। इनके कारणों से जनपद का कुटीर उद्योग बहुत ऊँचाई तक नहीं पहुँच पा रहा है।

जाति-

भारतीय समाज व्यवस्था जातियों का समुच्चय है, विभिन्न जातियों, खान-पान, वेश परम्परा, रक्त की शुद्धता, विवाह सम्बन्धों के निर्धारण परम्परागत सामाजिक परिस्थितियों और सामाजिक स्तरीकरण की श्रेणीबद्ध व्यवस्था में एक दूसरे से मिन्न स्थिति में है।

वर्तमान भारतीय समाज में जाति व्यवस्था के परम्परागत बन्द स्वरूप की प्रकृति में परिवर्तन हुआ है। व्यवसायों की विविधता एवं उनके बहुमुखी विकास के कारण व्यावसायिक वर्चस्व की स्थितियाँ एवं व्यवसायों योग्यता अनुभव और कौशल के आधार पर व्यवसाय विशेष रूप से सम्बन्ध होने के लिए स्वतंत्र है तथा उसे रोजगार के क्षेत्र में अवसरों की समानता प्राप्त है। इसे दृष्टि में रखते हुए वर्तमान शोध में चयनित कुटीर उद्योग में श्रमिकों की जाति के सम्बन्ध में तथ्यों का संकलन किया गया था।

अध्ययन क्षेत्र में भ्रान्ति, मूमि, क्षत्रिय, कार्यस्थल और वैश्य जैसी उच्च हिन्दू जाति के लोग कार्यरत थे। साथ ही साथ अन्य पिछड़ी जाति के कुटीर उद्योगों के उद्यमियों की संख्या, अनुसूचित जातियों तथा अन्य समुदायों के जाति समूहों से अधिक थी। मऊ जनपद के स्थानीय जनांककीय विशेषताओं से हो स्पष्ट होता है कि मऊ कर्मचारियों में विभिन्न समुदायों एवं जातियों के लोग निवास करते हैं। परम्परागत स्थानीय मुस्तिम लोगों की अपेक्षा उद्योगों में काम करने वाले कुछ अन्य प्रान्त के श्रमिक भी कर्मचारी में निवास करते हैं। यह कर्मचारी मऊ जनपद का बहुमुखी व्यापारिक केंद्र है तथा जिला मुख्यालय भी है। जाति के आधार पर जनपद में कुटीर उद्योग के उद्यमियों का वर्गीकरण किया गया है। जो सारणी संख्या 3.8 से स्पष्ट है।
### सारणी— 3.8
#### जनपद में कुटीर उद्योग के उद्यमियों की जाति

<table>
<thead>
<tr>
<th>जाति / जाति समूह</th>
<th>संख्या</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>उच्च जाति</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>ब्राह्मण</td>
<td>10</td>
<td>5.0</td>
</tr>
<tr>
<td>भूमिहार</td>
<td>34</td>
<td>17.0</td>
</tr>
<tr>
<td>कायस्थ</td>
<td>23</td>
<td>11.5</td>
</tr>
<tr>
<td>क्षत्रिय</td>
<td>6</td>
<td>3.0</td>
</tr>
<tr>
<td>बनिया</td>
<td>6</td>
<td>3.0</td>
</tr>
<tr>
<td>अन्य पिछड़ी जाति</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>मुस्लिम</td>
<td>60</td>
<td>30.0</td>
</tr>
<tr>
<td>अहीर</td>
<td>14</td>
<td>7.0</td>
</tr>
<tr>
<td>कुर्मी</td>
<td>5</td>
<td>2.5</td>
</tr>
<tr>
<td>कोपरी</td>
<td>2</td>
<td>1.0</td>
</tr>
<tr>
<td>अनुसूचित जाति / जनजाति</td>
<td>40</td>
<td>20.0</td>
</tr>
<tr>
<td>योग</td>
<td>200</td>
<td>100.0</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: व्यक्ति सर्वेक्षण 2006 पर आधारित।

तालिका के अन्तर्गत जाति और जाति समूहों के आधार पर दिये गये तथ्यों से स्पष्ट है कि मुस्लिम जाति और अनुसूचित जाति / जनजाति के उद्यमियों की संख्या अन्य जातियों की तुलना में अधिक है। मऊ जनपद के हथकरंध पर कार्य कर रहे उद्यमी अधिकांश परम्परागत कुशल मुस्लिम श्रमिक ही पाये जाते हैं। इसके बाद ही भूमिहार, कायस्थ, ब्राह्मण, अहीर, बनिया, क्षत्रिय, कुर्मी एवं कोपरी जाति जनजाति कुटीर उद्योग में शामिल हैं।

### धर्म—

भारत के प्रमुख धार्मिक समूहों में हिंदू, मुस्लिम, इसाई, सिख, बौद्ध और जैन धर्मावलम्बियों की जनसंख्या 99.6% है। कुल जनसंख्या में 82.6% हिंदू और 11.4% मुस्लिम हैं। इसाई लोगों की कुल जनसंख्या का 2.4% और सिख धर्मावलम्बियों की जनसंख्या 2% है।
सामाजिक-आर्थिक जीवन में धार्मिक समूहों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संस्कृति के मौलिक आधारों की सर्वनाम धर्म पर अवश्य प्रभाव होती है। दुर्धर्म और मैक्स बेबर जैसे आदर्श समाज वैज्ञानिक शिक्षानुसार एक अन्तर्गत धर्म को अत्यधिक महत्व दिया है। उसका कथन है कि “धर्म व्यक्ति की सम्पूर्ण आर्थिक क्षमताओं के साथ-साथ उसके सामाजिक जीवन का निर्माण करता है। धार्मिक मान्यताओं पूरे समाज की आर्थिक उन्मुखता का निर्धारण करती है। अपने प्रत्यय प्रारूप शिक्षानुसार और सामाजिक क्रियाओं के बीच और भावानुसार दशाओं का विश्लेषण करते हुए मैक्स बेबर ने कहा है कि “आर्थिक रचना के निर्माण के धार्मिक तत्त्वों का परिवर्तन तत्त्व को नाम दिया जा सकता है। उसके कथन हैं कि इस परिवर्तन तत्त्व के बदल जाने से समाज की आर्थिक रचना बदल जाती है।”

प्रोटेस्टेंट धर्म तथा पूर्णिमावाद के अन्तर्गत धर्म का विश्लेषण करते हुए बेबर ने हिन्दू धर्म और पूर्णिमा में समय भागों के विवेचन किया है। उसके अनुसार “भारत में पूर्णिमावाद उत्सव न होने का कारण हिन्दू धर्म था। हिन्दू धर्म आयातवादी है। यह संसार का मिथ्या मानता है। यहाँ जनम पर जाति व्यवस्था में मनुष्य को कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं थी।” इलाहाबाद दुर्धर्म ने भी अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा है और व्यक्ति के सामाजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव का विश्लेषण किया है। सामाजिक धर्म के शिक्षानुसार प्रतिपादन करते हुए दुर्धर्म ने कहा है कि “सामाजिक धर्म सामूहिक प्रतिनिधित्व पर आधारित होता है। इसकी उत्पत्ति टोटम से होती है और पवित्रता एवं अपवित्रता की मानव इसका मूल आधार रहता है। मानव प्रकृति और उसकी उन्मुखताओं के नियम में धर्म की प्रमुख भूमिका होती है।”

सारणी-3.9

जनपद में क्षेत्रीय उद्योग के उद्यमियों का धर्म

<table>
<thead>
<tr>
<th>धर्म</th>
<th>संख्या</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>हिन्दू</td>
<td>101</td>
<td>50.5</td>
</tr>
<tr>
<td>मुस्लिम</td>
<td>84</td>
<td>42.0</td>
</tr>
<tr>
<td>बौद्ध</td>
<td>5</td>
<td>2.5</td>
</tr>
<tr>
<td>ईसाई</td>
<td>10</td>
<td>5.0</td>
</tr>
<tr>
<td>योग</td>
<td>200</td>
<td>100.00</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2006 पर आधारित।
उपर्युक्त तालिका में दिये गये तथ्यों से यह स्पष्ट है कि कुटीर उद्योग के उद्यमियों में हिन्दू और मुस्लिम धर्मावलम्बी हैं। अन्य उद्यमियों में बौद्ध और ईसाई धर्म के मानने वाले हैं। बौद्ध और ईसाई धर्मावलम्बियों में अधिकांश अनुष्ठित जाति और जनजाति के सदस्य हैं।

मासिक आय–

व्यक्ति की व्यावसायिक गतिशीलता और क्षेत्र विशेष के प्रति उसके आकर्षण के विमित्त कारकों में एक निश्चित उदाहरण से प्राप्त होने वाले लाभांश भी प्रमुख भूमिका का निर्वाह करता है। कुटीर उद्योगों में कार्यरत उद्यमियों की मासिक आय 5 हजार रुपये से अधिक तक मापी गयी है।

आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था में उत्पादकता पर आधारित लाभांश वितरण व्यवस्था से कुटीर उद्योग के श्रमिकों की मजदूरी का निर्धारण होता है यह मजदूरी श्रमिकों के कार्य–अनुमोदन और कौशल का मूल्य मानी जाती है। मार्क्स ने अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि “किसी वस्तु के उत्पाद में श्रमिक द्वारा निवेशित श्रम उसके श्रम मूल्य का आधार होता है।” कार्ल मार्क्स का सिद्धांत श्रमिक के श्रम–सूत्र के पूर्ण बुतानन न किये जाने की ओर संकेत करता है। पूंजीपति का जन्म उसकी अतिरिक्त श्रम मूल्य के संचय से होता है। लेकिन वस्तु की उपयोगिता, बिनियमित्तीता और उस वस्तु के उत्पादन में लगा श्रमकाल तीनों मिलाकर वस्तु के मूल्य का निर्धारण करते हैं। वृहत श्रमिक को उसके श्रम का पूरा मूल्य नहीं दिया जाता इसलिए पूंजीपति और श्रमिक के मध्य ध्रुवीय अंतर बढ़ जाता है और पूंजीवाद में आत्मतिक असंगति का जन्म हो जाता है।

भारत एक विकासशील देश है। इस विकासशील अर्थ व्यवस्था में श्रम मूल्य विकसित देशों की अपेक्षा अधिकता कम है। संगठित क्षेत्रों में 1989–90 में 1086 करोड़ श्रमिक सार्वजनिक क्षेत्र में और लगभग 75 लाख श्रमिक नीति क्षेत्रों में कार्यरत थे, केंद्रीय सरकार के सार्वजनिक क्षेत्रों में 33.89 लाख, राज्य सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र में 68.90 लाख, अर्थसरकारी क्षेत्रों में 59.98 लाख और राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों में 22.38 लाख, नौजिल क्षेत्रों में और कृषि क्षेत्रों में 23.88 लाख प्रतिष्ठानों में 66.06 लाख और कुटीर उद्योगों में 8.6 लाख श्रमिक कार्य कर रहे हैं।
उद्धमियों के वेतन निर्धारण के लिए सन् 1976 में बनाये गये वेतन अधिनियम के अन्तर्गत समान कार्य के लिए रुद्री और पुरुषों को समान वेतन प्रदान किया जाता है। भारत में कम्पनी श्रमिकों की प्रतिवर्ष आय सन् 1986 में 1100 रु 50 थी। निम्नतम मजदूरी अधिनियम 1948 के अन्तर्गत सरकार द्वारा कुछ निर्धित रोजगारों में संलग्न श्रमिकों के वेतनमान का निर्धारण किया जाता है। प्रत्येक वर्ष उपर्युक्त निम्नतम मजदूरी के पुनरावलोकन और परिवर्तन कार्य का अधिकार, सरकार को प्राप्त है। आयुर्विज्ञान रोजगार अधिनियम 1948 के अन्तर्गत 100 श्रमिकों से अधिक श्रमिकों वाले कारखाने के श्रमिकों के वेतनमान का निर्धारण किया जाता है। सन् 1982 में इस अधिनियम में संशोधन किया गया था। सन् 1986 में चतुर्थ वेतन आयोग द्वारा केंद्रीय सरकार के श्रमिकों के लिए अलग–अलग संवन्धों के अनुसार वेतनमानों का निर्धारण किया गया था। प्रत्येक श्रमिकों को एक सुनिश्चित मूल वेतन, आवास भत्ता और गृहयुक्ति के अनुसार अतिरिक्त भत्ता दिया जाता है। जाति के आधार पर मासिक आय का सर्वक्षण तत्कालिक संख्या 3.10 में स्पष्ट किया गया है।

**सारणी – 3.10**

<table>
<thead>
<tr>
<th>जाति समूह</th>
<th>मासिक आय (हजार रुपये में)</th>
<th>योग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>उच्च जाति</td>
<td>2-3</td>
<td>3-4</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>(0.0)</td>
<td>(30.0)</td>
</tr>
<tr>
<td>अन्य पिछड़ी जाति</td>
<td>12</td>
<td>20</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>(20.0)</td>
<td>(33.33)</td>
</tr>
<tr>
<td>अनुसूचित जाति/जनजाति</td>
<td>40</td>
<td>20</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>(50.0)</td>
<td>(25.0)</td>
</tr>
<tr>
<td>अन्य</td>
<td>3</td>
<td>7</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>(15.0)</td>
<td>(35.0)</td>
</tr>
<tr>
<td>योग</td>
<td>55</td>
<td>59</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>(27.5)</td>
<td>(29.5)</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत— व्यवस्थित सर्वक्षण, 2006 में सर्वक्षित उद्धमियों की जाति एवं मासिक आय के आधार पर।
सारणी के अन्तर्गत दिये गये तथ्यों से यह स्पष्ट है कि 29.5 प्रतिशत उद्यमी 3 हजार से 4 हजार रुपये प्रतिमाह, 27.5 प्रतिशत उद्यमी 2 हजार से 3 हजार रुपये प्रतिमाह, 23.5 प्रतिशत उद्यमी 4 हजार से 5 हजार रुपये प्रतिमाह तथा 19.5 प्रतिशत उद्यमी 5 हजार रुपये से अधिक प्रतिमाह आय करते हैं। स्पष्टतः अधिकांश उद्यमी 3 हजार से 4 हजार रुपये के बीच मासिक आय प्राप्त कर पाते हैं।